Akshardhara Research Journal

March-April 2025

VOL -01 ISSUE-V

Akshara Publication
Plot. 42 Akshara Publication Gokuldham Residency
Prerna Nagar Wanjola Road Bhusawal Dist.Jalgaon [M. S.] India 425201

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

-: Chief Editor:-

Dr Priyanka J. Mahajan

Co-1110/6 Mamaji Talkies area Juna Satara Bhusawal,
Dist. Jalgaom (M.S) India Pincode 425201
Website: https://admrj.com
E-mail : admrj0404@gmail.com

-: Executive Editor & Publisher :-

Dr. Girish S. Koli

42 Akshara Publication Gokuldham Prerananagar Wanjola Road Near Star Lone Bhusawal Dist. Jalgaon
[M. S.] India 425201
Mobile No: 9421682612

Member Of Editorial Board

DR. E.G. WAJIRA GUNASENA
Designation : Senior Lecturer (I) In Hindi
Address : Department of Languages, Cultural Studies and Performing Arts University of Sri Jayawardenepura, Nugegoda, 10250, Sri Lanka
Mobile : 0094 112758315
Email Id : wajiragunasena@sjp.ac.lk

DR. VIVEK MANI TRIPATHI
Designation : Assistant Professor
Address : Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China.
Mobile : 86-18666279640
Email Id : 2294414833@qq.com

Dr. Girish Kumar Painoli
Designation : Professor
Address : School of Commerce and Management, Aurora Deemed to be University, Hyderabad India Pin Code:500098
Mobile : 07674938785
Email Id : girishkumar@aurora.edu.in

Dr.VIVEK ARUN JOSHI
Designation: Assistan Professor
Address: TES's Institute of Management and Career Development, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425201
Mobile: +91 9881716287
Email Id : admin@ssgbhindimv.com

ADRJ Disclaimer :

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of ADRJ editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

07

आंचलिक उपन्यासों के आधार पर आँचलिक क्षेत्रों के आर्थिक विकास का विश्लेषण

डॉ. सुनील कुमार
ऐसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग
श्री शालिगराम शर्मा स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय रासना, मेरठ।

आजादी के 75 वर्षों बाद भी देश के विभिन्न अंचलों ग्रामीण क्षेत्र में आज भी आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं पाया है। वहाँ पर जमींदार या सामंत द्वारा शोषण की प्रक्रिया अभी भी जारी है। विवेकीराय के उपन्यास 'नमामि ग्रामम्' में ग्राम रूप वृद्ध कहता है कि–''मेरे बेटे खाने–पीने की सभी वस्तुएँ उत्पन्न करके भी भूखे–अधभूखे रह जाते हैं। कुछ युग का प्रभाव है जो शोषण कर लेता है, कुछ निजि अज्ञानता है, जो किसान को जकड़े रहता है। आर्थिक उन्नति और नई खेती के आयामों के विकास के साथ भोजन सुधार की जैसी आशा की जाती है, वैसी वास्तव में किसान की अज्ञानतावश व्यवहार में उतरती नहीं दीख रही है। एक किसान के पास भैंस है, वह काफी दूध देती है। उस किसान से आशा की जाएगी कि वह मजे से दूध घी–खाएगा एवं वह तथा उसका परिवार सुखी और स्वस्थ होगा। विपरीत इसके होता यह है कि किसान उस दूध–घी को रुपये की शक्ल दे देता है। स्वयं मट्ठा पी कर संतोष करता है।'1

इस प्रकार ग्रामीण लोग अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु भरसक प्रयास करते हैं किंतु उनके ये प्रयास ना काफी होते हैं। विभिन अंचलों पर आधारति आँचलिक उपन्यासों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आज आँचलिक क्षेत्रों में भी स्वार्थ की भावना पनपने लगी है। आपसी सहयोग की भावना का लोप हो रहा है। इन स्वार्थी हाथों को यदि कोई क्षति पहुँचानें की कोशिश करता है तो वह स्वार्थी व्यक्ति क्रोधित होकर लड़ने–झगड़ने लगता है। यथा–''स्वार्थ की भावना बढ़ गई है। सेवा और त्याग का सर्वथा अभाव है। वस्तु की कमी उतनी नहीं, जितनी प्रयोक्ता के ह्रदय में शुद्ध भावना की। सर्वस्व हथिया लेने के लिए आदमी आज जैसा उतावला कभी नहीं देखा गया। लालसाओं पर आँच आते ही वह बावला हो जाता है। एक–दूसरे को देखकर जलना, बनैले जंतु एवं सांड़ भैंसे की तरह एक–दूसरे को देखकर मनियाते फिरना एक साधारण बात हो गई है।''2

आज इनकी स्थिति ऐसी हो गई है जैसे ''जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, उसी प्रकार गाँव के बड़े छोटों को।''3 रोजगार के अभाव में तथा शोषित होकर निम्न वर्ग के लोग विद्रोह कर उठते हैं और फिर डाकू आदि बनकर जंगल में रहने लगते है। जीवन–यापन करने के लिए अपहरण आदि का कार्य करने लगते हैं। यथा–''भरत शर्मा ने बहुत मिन्नत की, अपनी उमर और बीमारी की दुहाई दी, मगर बेकार! राइफल की नोक पर उन्हें जंगल में ले जाया गया।''4 तब ये शोषित, उत्पीड़ित डाकू अपहरण के बाद उसके घर फिरौती की चिट्ठी भिजवाते हैं। यथा–''मनोज हमरा जान मुसीबत में है। जान का सलामती चाहते हो तो पचास हजार रुपैया छोटन के हाथ नहरी पर भिजवा दो। पुलिस को खबर मत करना, नहीं तो जान मार डालेंगे इ लोग।''5

गाँव के दुकानदार, जमींदार व ठेकेदार फिर इन डाकुओं से डरने लगते हैं क्योंकि जान तो सभी को प्यारी होती है। और जो ये चाहते हैं वहीं करने लगते हैं। यथा– ''दुलार की बेटी शादी के लिए सामान आपने दिया था ?'

'हाँ हुजूर!'

'क्यों ? खैरात ?'

'ना हुजूर ! हमरा के चिट्ठी मिलल जंगल सरकार के। गरीब बनिया हइँत हुजूर। न देइँत तो दुकान लुट जाइत ! जान न बचित हुजूर।'

'जंगल सरकार का हुलिया बता सकते हैं ?'

'हमरा त–अ सिरिफ चिट्ठी मिलल रहे हाकिम !'

'आपने उसे कभी देखा ही नहीं ?'

'ना देखलीं हाकिम !' 'चिट्ठी कहाँ है ?'

साहु ने काँपते हाथों से तिजोरी खोलकर चिट्ठी निकाली।''6

गाँव में कुछ लोग धनी हैं तो कुछ गरीब। यदि ये अमीर लोग चाहें तो गरीब आदमी को भूखा नहीं मरना पड़े किंतु भाग्य में जो लिखा है उसे कौन टाले? अमीर अपनी मस्ती में रहता है और ये गरीबों का शोषण करने

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

को तैयार रहता है। यथा–''बीस गरीब हैं, दो धनी हैं। दोनों धनी यदि चाहते तो दस गरीब पशु जीवन न बिताते। पर वे तो अपने में मस्त हैं। जो बचता है, उसे आपस में लड़कर व्यय कर देते हैं। कम होता है तो गरीब जैसे उनकी जादू की तिजोरी हैं। कामधेनु हैं। यथेष्ट मात्रा में दुह लो। जीवन में उन्हें देना कम परंतु लेना अधिक है।''7

इन आँचलिक क्षेत्रों की ओर कोई नहीं देखता। सब अपने स्वार्थ में लिप्त रहते हैं। यही कारण है कि गरीब आदमी के भाग्य का स्तर गिरता जा रहा है।

सरकारी आदमी भी इन ग्रामों का दौरा तो कर लेते हैं किंतु ध्यान कोई नहीं देता। स्वास्थ्य कर्मचारी को गाँव में ही रहना चाहिए किंतु रहता कोई नहीं। किराया तक अपना ये सरकार से ले लेते हैं फिर भी गाँव में जाने से कतराते हैं। यथा–''सरकारी आदमी समय–समय पर दौरा करते हैं। यह दीगर बात है कि ग्राम सेवक को यहाँ रहना चाहिए, वह नहीं रहता। पंचायत सेक्रेटरी और पटवारी का भी यही हाल है। बी. डी. ओ. खास अवसर पर और ए. डी. ओ. दौरे का टी. ए. बिल बनाने के लोभ–मोह में ही सही, मगर आते हैं। मिडवाइफ, दाइयाँ भी तीन–चार महीने में कभी.....''8 ये अफसर लोग तो कुर्सियों से ऐसे चिपके रहते हैं; जैसे उसके नीचे अशर्फी दबा दी गई हों और ये खोदते रहें और मालदार होते जाएँ। ये इन ग्रामों के लिए जो योजनाएँ चलवाते हैं उनमें भी अपना स्वार्थ साधते हैं। अंतिम समय तक काम नहीं करवाते और अंत में रिश्वत देकर बच निकलते हैं। यथा–''मैंने एक जगह पढ़ा था–कि अफसर लोग समझते हैं, सरकारी कुर्सियों के नीचे असर्फिया दबी रहती हैं। खुदाई करते जाओ। मालामाल हो जाओगे। शिक्षा विभाग में ही क्या, हर विभाग में ऐसा हो रहा है। प्रौढ़ शिक्षा, नारी शिक्षा, बाल शिक्षा, कैंप, नुमाइश और साले निलयम–शिलयम सब बकवास! ढोग हैं.....तमाशे। इन तमाशों का भोंपू बजना चालू होता है तो बजता ही रहता है। और जब म्याद पूरी होने को आती है, संबंधित लोग अपने–अपने थैलों के मुँह खोल देते हैं और भर–भरकर ढ़ो ले जाते हैं।''9

गाँवों में जमीन का कोई मामला हो, उसे बैठकर सुलझाने की अपेक्षा मुखिया लेखपाल को बीच में डालकर अपना हिस्सा निकलवाता है। अर्थात् अपना स्वार्थ साधता है। वह कहता है–''नहीं जी लेखपाल बताएगा। सूत–सूत बराबर धरती का हिसाब उसके पास रहता है। साला लेखपाल! स्याही में पानी मिलाकर धुँधला लिखता है, खुद को लेखपाल नहीं, लोकपाल समझता है। 10

लेखपाल कहे अनुसार मुखिया कार्य करता है किंतु लेखपाल पैसे के लालच में जमीन इधर की उधर तथा उधर की इधर बताता रहता है। यथा–''भाई, गाँव के आदमी कम बेईमान नहीं, मेरी सुनो, लेखपाल ने कहा था।'मेरे नक्शे में यह जमीन परसादीलाल वल्द तोलाराम की है, लेकिन नाँद–लड़ामनी शिबला की गड़ी है। भँवरसिंह की नाली यहाँ नहीं, यहाँ से दस कदम के फासले पर थी, मगर वह तो अपनी जगह से पंद्रह फिट हट चुकी।11

आज महँगाई और भ्रष्टाचार का राक्षस अपना मुँह खोले विष उगलता फिरता है। क्योंकि सरकार के मुख्य कार्यकर्त्ता (संचालक) कुर्सी की लड़ाई में उलझे हुए हैं। यही कारण है कि उनके अधिनस्थ कर्मचारी खुलकर लूट–खसोट कर रहे हैं। दिन–प्रतिदिन विदेशी कर्जा बढता जाता है। यथा–''महँगाई और भ्रष्टाचार को पूर्ण रूप से खुली छूट मिल गई है, क्योंकि सरकार के स्तंभ कहे जाने वाले लोग कुरसियों की लड़ाई में उलझे हैं। पूरा देश विदेशी ऋण में गले तक डूब गया है। उसका ब्याज चुकाना भी कठिन है।''12

आज ग्रामीण अंचल में जब दो–चार लोग बैठ कर आपस में बातें करते हैं तब वे कहते हैं कि जमाना खराब हो रहा है। जब अभी यह स्थिति है, चारों तरफ गुंडागर्दी, लूटखसोट, हत्या, बलात्कार आदि आम बात हो गई है तब आगे आने वाले कुछ और वर्षो में देश की स्थिति क्या होगी। सरकार जनसंख्या पर भी रोक नहीं लगा रही है। उसका परिवार नियोजन का प्रचार झूठा साबित हो रहा है। उन्हें खबर लेने की फुर्सत ही नहीं बस गद्दी की चिंता है। जनता को आपस में लड़ाते रहो और कुर्सी बची रहेगी। ऐसा कब तक चलेगा? यथा–''जमाना बहुत खराब होता जा रहा है बाबू साहब.....। मैं तो सोचता हूँ आजादी के इतने सालों में ही देश की जब यह स्थिति है तब इतने ही और सालों के बाद देश में गुंडागर्दी, लूट–खसोट, हत्या–बलात्कार तो आम बातें हो जाएंगी। सरकार आबादी पर रोक लगा नहीं रही.....मुझे तो लगता है, यह जो परिवार नियोजन का प्रचार हो रहा है यह सब सरकार की चोचलें हैं.....करना कुछ नहीं दिखावा अधिक। सभी को गद्दी की चिंता है। लोगों को आपस में बाँटो....हिंदू–मुसलमानों को लड़ाते रहो....गद्दी बची रहेगी।''13

परिवार नियोजन पर चर्चा करते हुए बात करते हैं कि सरकार भी दोहरी नीति का हिंदू परिवारों में एकल विवाह व मुस्लिम परिवारों में बहुविवाह को मान्यता दी गयी हैं। सरकार को सबके साथ एक जैसा नियम तथा इसे सख्ती से लागू किया जाना चाहिए तभी परिवार नियोजन की शर्तो को पूरा किया जा सकता है। ''यदि

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

आज ऐसा नहीं कर सके तो आगे इससे भी अधिक पिसने के लिए अपने को तैयार कर लें।''14 बढ़ती जनसंख्या के कारण आज ही रोजगार की परेशानी है, आगे तो हा–हाकार मच जाएगा। जब मजूदर एक के स्थान पर दस होंगे तो शोषण भी बढ़ेगा। शोषितों की आवाज भी कोई नहीं सुनता यथा– ''आप लोग शर्त रखें कि उनके, साथ के लोगों के यहाँ तभी काम करने जाएंगे, जब वे इस बात का वचन दें कि किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं करेंगे, गाली–गलौच, मार–पीट नहीं करेंगे और पूरी मजदूरी देंगे।''15

''कैसी अंधेर नगरी और कैसा चौपट राज आया है यह। जिन सरकारी मुलाजिमों का काम सरकार की हिफाजत करना, जनता की सेवा करना होना चाहिए, वही सरकार के पाँव कुतर रहे हैं। उसके खजाने में बरकत करने की बजाय उसके खजाने पर डाका डाल रहे हैं। उसकी जनता का खून चूस रहे हैं। कानून का भय दिखाकर गैरकानूनी काम कर रहे हैं। जिनका फर्ज है सरकार को जनता की भलाई के उपाय सुझाना, वे ऐसे काम सुझा रहे हैं जो सदियों में भी पूरा न हों।''16

नेताओं का विचार है कि ''ग्राम विकास तभी हो सकता है, जब आदमी का अपना विकास हो। इशारे में समझ लो तो कहूँ–निर्णायक वोट तो ये ही हैं।''17

ग्राम में जब से पता चला कि अब ग्राम में भी चुनाव होगा और सरपंच चुना जाएगा, वहीं गाँव के सभी मामले देखेगा तो गाँव में भी गुटबंदी होने लगी। ''उसी दिन उन्हें यह जानकारी मिली थी कि अब उनके गाँव में पंचायतीराज होगा। गाँव के लोगों में से ही सरपंच और पंचों का चुनाव होगा। यानी जो सरपंच चुना जाएगा, उसी का राज और चुनाव होगा वोटों के आधार पर।''18

शोषण का एक और रास्ता निकल आया। निम्न वर्ग का तो हर प्रकार से शोषण होता ही है। उनके हिस्से पर तो कोई न कोई नजर गड़ाए ही रहता है। सरकार से आने वाली मद्द इन लोगों के ही पेट में चली जाती है। यथा–''लडैई के नाम अब जाकर जो कोटा तय हुआ है मिट्टी के तेल का, शक्कर का, वह भी निर्मल हड़प गया चुपचाप। वहीं चंदेरी में पूरा माल बेच देता है। मजाल है जो एक बूँद यहाँ तक लाता हो तेल की, या एक दाना भी देखने देता हो शक्कर का।''19

आज ग्राम हो या शहर जहाँ भी सरकारी या किसी की खाली जमीन पड़ी है उन पर अवैध कब्जा कर लिया जाता है। यथा–''अवैध अधिकार! ग्राम समाज की जमीन पर कब्जा! हटाओं ये छप्पर। फोड़ो ये चबूतरा। यहाँ किसी की बेईमानी नहीं चलेगी। यह किसी के बाप दादों की जमीन नहीं है। खोलो गाय–बकरी। खोलो बछड़ा–बच्चा।''20

इन निम्न वर्गो ने सपना देखा था कि आजादी के बाद देश में तरक्की होगी और चारों ओर विभिन्न अंचलों का भी विकास होगा। उसी क्रम में कुछ विकास तो अवश्य हुआ है किंतु समुचित विकास होना अभी शेष है। यथा–''आजादी के फौरन बाद मास्साब ने गाँव वालों को जो आश्वासन दिया था कि अब देश में तरक्की होगी उसके बहुत थोड़े से प्रमाणों में से एक और शेष प्रमाणों का साक्षी था यह गजट। मोटर, सड़क, मदरसा, गजट यही तो प्रमाण थे मास्साब के पास। अगर ये न होते तो मास्साब पूरे गाँव के सामने झूँठे पड़ जाते।''21

तरक्की का रास्ता शिक्षा के मैदान से होकर गुजरता है। इसीलिए वर्तमान में शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है। विरेंद्र जैन ने अपने 'डूब' उपन्यास में शिक्षा ग्रहण करने के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है–''वे कैसे भूल जाएँ कि उसी शिक्षा की बत्तल जनक सिंह मास्साब हो गए। उनके दोनों भैया पुलिस के अफसर हो गए। बड़े साव के बड़े लड़का विद्वान हो गए। मझले साव के बड़े लड़का लाटसाब डाक्टर बनने वाले हैं। तुलसी कक्का के नाती इंजीनियर बनेंगे।....रतन साव का लड़का ओवरसियर फिर वे दोनों मिल के राजघाट पर बनने वाला बाँध बनवाएँगे।''22

इस प्रकार देश में ग्रामांचल क्षेत्र के विकास पर सरकार द्वारा समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। नेता आज स्वार्थ साधने में लगे हुए हैं। उन्हें कुर्सी की लड़ाई से फुर्सत मिले तभी तो कुछ करें। विभिन्न अंचलों में निवास करने वाले ग्रामीणों को अपना विकास स्वयं करना होगा और यह विकास का रास्ता शिक्षा के केंद्रों से होकर गुजरता है। अतः प्रत्येक आँचलिक क्षेत्र के निवासी को शिक्षा पर समुचित ध्यान देना होगा। इसी क्रम में सरकार द्वारा कक्षा–12 तक शिक्षा निःशुल्क करना एक सराहनीय कदम है। इसी प्रकार के कुछ अन्य कदम उठाने की आवश्यता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विवेकीराय : नमामि ग्रामम्, पृ0–14
2. विवेकीराम : ग्रामम् नमामि, पृ0–100
3. विवेकीराम : ग्रामम् नमामि, पृ0–45

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

4. संजीव : जंगल जहाँ शुरु होता है, पृ0–43
5. संजीव : जंगल जहाँ शुरु होता है, पृ0–43
6. संजीव : जंगल जहाँ शुरु होता है, पृ0–59
7. विवेकीराम : ग्रामम् नमामि, पृ0–100
8. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, पृ0–26
9. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, पृ0–178
10. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, पृ0–200
11. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, पृ0–200
12. विवेकी राय : मंगल भवन, पृ0–113
13. रूपसिंह चंदेल : पाथरटीला, पृ0–115
14. रूपसिंह चंदेल : पाथरटीला, पृ0–266–267
15. रूपसिंह चंदेल : पाथरटीला, पृ0–266–267
16. विरेंद्र जैन : डूब, पृ0–245
17. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, पृ0–201
18. विरेंद्र जैन : डूब, पृ0–12
19. विरेंद्र जैन : डूब, पृ0–224
20. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, पृ0–200
21. विरेंद्र जैन : डूब, पृ0–12
22. विरेंद्र जैन : डूब, पृ0–80